कला शिक्षण : कुछ सवाल जवाब

❑ देवी प्रसाद

कला -शिक्षण को लेकर शिक्षक-अभिभावकों के बीच अनेक सवाल और शंकाएं रही हैं। देवी प्रसाद लिखते हैं कि सेवा ग्राम के प्रशिक्षण-विभाग, कला-शिक्षा प्रशिक्षण विभाग और बाहर भी हर कहीं उनसे शिक्षक प्रश्न करते रहते थे। अभिभावकों ने भी उनके सामने ऐसे प्रश्न और समस्याएं रखी थीं। देवी प्रसाद ने ऐसे प्रश्नों को संकलित किया और उनके उत्तर तैयार किये। ऐसा करने की प्रेरणा उन्हें डब्ल्यू. वायोला की पुस्तक 'चाइल्ड आर्टस' से मिली । कला-शिक्षण से संबद्ध इन व्यावहारिक एवं जटिल सवालों के देवी प्रसाद ने अपने अनुभव और चिंतन से सीधे सरल जवाब दिये हैं । यह प्रश्नोत्तरी देवी प्रसाद की पूर्वोक्त पुस्तक से यहां पुन: प्रकाशित की जा रही है । शिक्षक-अभिभावकों के लिए इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है ।

- *हमारे वर्ग में कुछ ऐसे बच्चे हैं, जो कहानी बताते समय या बातें करते समय भी ठीक-ठाक शब्दों में अपने विचार क्या चित्रकला द्वारा वे ज्यादा अच्छा आत्म-प्रकटन कर पायेंगे ?*

- हां, कुछ ऐसे अनुभव होते हैं, जो केवल चित्रकला द्वारा ही प्रकट किये जा सकते हैं । बच्चों की बुनियादी भाषा आकार की भाषा होती है । इसलिये चित्रकला उनके आत्म-प्रकटन के लिए बहुत अच्छा माध्यम है ।

- *हमारे स्कूल में बच्चों के सामने कोई पत्ता, गेंद इत्यादि रखकर उसका चित्र बनाने के लिए कहते थे । क्या यह ठीक था?*

- नहीं ।

- *क्या याददाश्त से किसी वस्तु का चित्र बच्चों को बनाने के लिए कह सकते हैं ?*

- हां, ठीक है । बच्चे जो चित्र अपनी इच्छा से बनाते हैं, वह तो सब याददाश्त की ही बुनियाद पर होता है ।

- *बच्चों को आमतौर पर गहराई का बोध नहीं होता । दूर, नजदीक का भान भी उनके चित्रों में अक्सर नहीं होता है । क्या उनको इसका ज्ञान करा देना ठीक होगा ? क्या बच्चे यह सीखना चाहते हैं ?*

- गहराई का बोध, जिसे 'पर्सपेक्टिव' कहते हैं, बच्चों के चित्र में न रहना ही स्वाभाविक है । किन्तु दूर और नजदीक का भान बच्चों को अपने ढंग से होता ही है । उनका पर्सपेक्टिव चाक्षुष नहीं, मानसिक होता है । ठीक उम्र आने पर बच्चों को स्वयं चाक्षुष और पर्सपेक्टिव की आवश्यकता महसूस होती है । वह उम्र दस-ग्यारह साल के बाद ही आती है । उस समय मामूली सुझाव के तौर पर वह ज्ञान दिया जा सकता है। इसे जबरदस्ती सिखाने की जरूरत नहीं । बाद में चलकर सिखाने से वह चीज स्वाभाविक बनकर आयेगी ।

- *आप अपने वर्ग में प्रेक्षकों को आने देते हैं ? क्या इससे बच्चों का ध्यान इधर-उधर नहीं जाता ?*

- प्रेक्षकों के आने से वर्ग में अस्वाभाविकता आ जाती है और बच्चों का ध्यान टूट जाता है । अगर कभी प्रेक्षक का वर्ग में आना आवश्यक ही हो पड़े, तो जरूरी है कि इसका ध्यान रखा जाय कि बच्चों को उसका आभास मात्र भी न हो।

- *आप एक ही उम्र के बच्चों के एक साथ चित्र के वर्ग में देना ठीक समझते हैं ? अलग-अलग उम्र के भी क्या एक साथ काम कर सकते हैं ?*

- हां, ऐसा किया जा सकता है । बशर्ते कि वातावरण में स्वतंत्रता हो । किन्तु आठ-नौ वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की एक टोली और उससे बड़ों की अलग टोली बनाना अच्छा होगा ।

- *अगर पांच साल का बच्चा आठ साल के बच्चे के जैसा चित्र बनाता है, तो उसके मानसिक विकास के बारे में क्या समझना चाहिये ?*

- इनमें दो बातें हैं । अगर आम स्टैंडर्ड के हिसाब से पांच साल का बच्चा आठ साल के उम्र के बच्चे के जैसे चित्र बनाता है, तो उसे औसत से ऊपर मानना चाहिये । या तो वह वातावरण के कारण ऐसा हुआ है या उसे 'सिखाकर' ऊपर लाया गया है या वह स्वयं ही दूसरे बच्चों से अलग है । अगर उसे 'सिखाया' नहीं गया है, तो उसका इस तरह अलग होना कोई नुकसान की बात नहीं है।

  अगर उस समाज का आम स्टैंडर्ड सामान्य तौर पर माने गये बच्चों के आम स्टैंडर्ड से नीचा है, तो उनमें से कुछ बच्चे ऐसे निकलें, यह कोई अस्वाभाविक चीज नहीं माननी चाहिये ।

- *अगर बच्चा किसी एक माध्यम में काम करने में खूब निपुण होता है , तो उसको उस माध्यम को छोड़कर दूसरे का उपयोग शुरु करना क्या जरूरी है ?*

- नहीं, किन्तु यह बात जरूर अच्छी है कि बच्चे का जितना भी हो सके, अधिक-से-अधिक माध्यमों का अनुभव हो।

- *बच्चों के मां-बाप अक्सर यही चाहते हैं, कि उनका बच्चा सयानों की तरह 'अच्छे' चित्र बनाये । इस विचार से बच्चों के चित्र को सुधारने का प्रयत्न भी वे करते हैं । उनसे बच्चों को कैसे बचायेंगे ?*

- यह काम प्रौढ़ शिक्षा का है । मां-बाप को यह सिखाना होगा कि बच्चों का स्वाभाविक कला-धर्म क्या है । और उनका विकास ठीक ढंग से उनकी स्वाभाविक कला सीढ़ी के द्वारा ही हो सकता है ।

- *मेरी तीन साल की लड़की कागज पर रंग छिड़क देती है। कोई चित्र नहीं बनाती । तो क्या यह ठीक है ? क्या उसको किसी जानवर या वस्तु इत्यादि के आकार का बोध नहीं करा देना चाहिए ?*

- जिसे आप रंग छिड़कना कहते हैं, वही बच्चे का चित्र है। वही 'जानवर' है और वही उसकी 'वस्तु' है । अगर आपने उसका स्वाभाविक विकास होने दिये, तो वह रंग छिड़कने की प्रक्रिया विकसित होकर ऐसी हो जायेगी कि वस्तु भी बन जायेगी और जानवर भी ।

- *बच्चों को रंगों के बारे में कुछ सिखाना चाहिये कि नहीं?*

- नहीं । बच्चों का अपना खुद का रंग बोध होता है ।

- *किस उम्र तक बच्चों को अपने ही मन से चित्र बनाने देना चाहिये?*

- इसका कोई नियम नहीं बनाया जा सकता । कुछ बच्चे तो छोटी उम्र में ही सुझाव की आवश्यकता महसूस कर सकते हैं और कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं, जो बड़े होकर भी अपनी मर्जी से चित्र कला करते-करते आगे बढ़ सकते हैं ।

- *क्या कभी-कभी बच्चों को खास वस्तु का चित्र बनाने के लिए कहना गलत होगा ?*

- नहीं । मौका आने पर ऐसा करना जरूरी ही होता है । जो बच्चे एक ही चीज को बार-बार दोहराते रहते हैं, उन्हें तो इस तरह के सुझाव देने ही पड़ते हैं ।

- *मेरा चार साल का लड़का हमेशा आकर कहता है कि इंजन का चित्र बना दो । वह छोड़ता ही नहीं, जब तक मैं उसको छुक-छुक गाड़ी का चित्र नहीं बना देती हूं, तो क्या ऐसा चित्र बना देना ठीक होगा ? उसके अपने चित्रों पर इसका क्या असर होगा?*

- कभी-कभी बना देने में कोई नुकसान नहीं । किन्तु उसे छुक-छुक गाड़ी का चित्र खुद बनाने के लिए उत्साहित करना चाहिये। हो सके, तो पहले वह बनाये ।

- *बच्चों के लिए आज जो साहित्य प्रकाशित होता है, उसमें बहुत रंग बिरंगे चित्र होते हैं । उसके बारे में आपका क्या विचार है ?*

- बच्चे रंग जरूर पसंद करते हैं, किन्तु जैसे-तैसे रंग-मेल के चित्रबनाकर उनको रंग बिरंगा बना देना और यह कहना कि

यह बच्चों के लिए खासतौर पर बनाया गया है, बिल्कुल गलत बात है। इससे बच्चों का रंग-बोध बिगड़ता है । बच्चों के लिए चित्रित पुस्तकें कैसी हों, यह प्रश्न तो अलग है । किन्तु जहां तक रंग का प्रश्न है, यह स्पष्ट है कि रंग-मेल कला की दृष्टि से ऊंचे स्तर का हो ।

- *वर्णमाला सिखाने की जो किताबें होती हैं, उसमें कई तरह के रंगों का उपयोग होता है, उसके पीछे यह विचार है कि ऐसे रंगबिरंगे बनाने से बच्चों के लिए वे आकर्षक होते हैं और वे अक्षर आसानी से सीख लेते हैं, यह बात ठीक है क्या?*

- वर्णमाला सिखाना अलग चीज है और किताबें रंग बिरंगी बनाकर आकर्षक बनाना अलग चीज है । हमारा विषय यहां वर्णमाला सिखाने की पद्धति का नहीं है, किन्तु हमें लगता है कि रंग बिरंगा बनाने से वर्णमाला सीखना आसान हो जाता है, यह बात अवैज्ञानिक है ।

- *मेरे वर्ग के तीन बच्चे हैं, जो कभी अपने मन से चित्र नहीं बनाते हैं, दूसरों की नकल करते हैं । इस वृत्ति को कैसे रोकना चाहिये?*

- नकल करना, इसमें कोई शक नहीं, ठीक नहीं है । बच्चों को नकल करने से बचाना चाहिये, किन्तु होशियारी के साथ। उन्हें अलग बैठाना ही अच्छा होगा । लेकिन उन्हें अलग किया जा रहा है और वह भी इसलिये, क्योंकि वे नकल करते हैं, यह बात उनके मन में नहीं आनी चाहिये । आखिर शिक्षक को यह तो समझ ही लेना चाहिये कि कुछ बच्चों की शक्ति कम होती है और कुछ की ज्यादा । कुछ अधिक सृजनात्मक होते हैं और कुछ कम । कुछ तो केवल अनुकरण से सीखते हैं । सिद्धांत के तौर पर नकल करना बच्चों के लिए गलत ही मानना चाहिए ।

- *जो बच्चे खुद के चित्र बनाते हैं, वे भी कभी-कभी एक दूसरे की नकल करते हैं । तो यह क्या सर्वथा गलत बात है?*

- अगर यह नकल आपसी लेन-देन की चीज है, तो इसमें क्या नुकसान है ?

- *बच्चों के चित्रों का अभिप्राय बहुत दफे मुझे समझ में नहीं आता है, तो क्या वह बच्चों से पूछ लेना ठीक है ?*

- हां, जो चित्र बच्चे ने बनाया, अक्सर वह उसका मौखिक वर्णन करना भी पसंद करता है । उस तरह का वर्णन भी आत्म-प्रकटन का एक अच्छा साधन है । मैंने अक्सर पाया है कि अपने चित्र पर या उससे संबद्ध किसी विषय पर साथ-साथ लेख लिखना कुछ बच्चों को खूब अच्छा लगता है । इसलिये चित्रों का अभिप्राय पूछ लेने में कोई नुकसान नहीं है । किन्तु उसके ऊपर आग्रह नहीं करना चाहिये । क्योंकि जो प्रकट करना था, वह तो उसने अपने चित्र से ही कर दिया। अगर कुछ बचा होगा, तभी वह उसे 'कह' सकेगा । शिक्षक को बच्चे की भाषा, उसका मन समझना चाहिये। जितना अनुभव शिक्षक का बढ़ेगा, उतना ही वह बिना पूछे बच्चों के चित्रों का अभिप्राय स्वयं समझने में समर्थ होता रहेगा । मनोवैज्ञानिक तो बच्चों के चित्रों से केवल चित्रों का अभिप्राय ही नहीं, उनके मन की गहराई की बातें भी समझने का प्रयास करते हैं।

- *क्या बच्चों को ट्रेस करने देना चाहिये ?*

- नहीं ।

- *छोटे बच्चों को एक साथ ज्यादा रंग देना ठीक है क्या ? बच्चों को किस तरह की कूचियां देनी चाहिये ?*

- अक्सर देखा गया है कि अधिक रंग देने पर भी बच्चे दो-तीन रंग ही इस्तेमाल करते हैं । इसलिये सबसे अच्छा यह होगा कि उन्हें पांच-छह रंग ही दिये जायें । साधारण ब्रश बच्चों के लिए काफी होते हैं। बहुत बारीक ब्रश का कोई उपयोग नहीं होता, बल्कि उनसे बच्चों का हाथ खुलता नहीं । इसलिये मध्यम और मोटे ब्रश देने चाहिये । बड़े कागज पर चित्र बना रहे हों, तो बड़े ब्रश की अधिक जरूरत पड़ सकती है ।

- *अगर एक बच्चा कोई चित्र आधा करके छोड़ देता है और दूसरे दिन उसे पूरा करना कभी-कभी पसंद नहीं करता । तब ऐसी हालत में हमें क्या करना चाहिये ?*

- जो चित्र शुरू किया है, उसे पूरा करना ही चाहिये । अगर अगले दिन या कुछ दिन बाद भी हो, बच्चे को उस चित्र को पूरा करने के लिए उत्साहित करना चाहिये । चित्र अधूरा छोड़ देना अच्छी आदत नहीं है । आमतौर पर बच्चे अपना चित्र पूरा करना पसंद करते ही हैं।

- *शिक्षकों के लिए क्या ज्यादा जरूरी है, चित्रकला की पद्धतियों का ज्ञान या बच्चों की मनोवृत्ति को समझना ?*

- बच्चों की चित्रकला का अनुभव देने के लिए यह जरूरी नहीं कि शिक्षक कला-पद्धतियों में निपुण हो, बल्कि मैंने तो यह पाया है कि जो शिक्षक बच्चों की मनोवृत्ति, उनके कला-अनुभव आदि को जानता है, उनके साथ सहानुभूति का अनुभव करता है, वह अच्छे कलाकार से, जो बच्चों को नहीं समझता है, कहीं अच्छा शिक्षक सिद्ध होता है।

- *पुस्तकों में जो चित्र पाये जाते हैं, उनका बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?*

- जहां तक जानकारी का प्रश्न है, उन चित्रों से बच्चे को मदद मिल सकती है । किन्तु वह उनके कला-अनुभव के लिए मददगार नहीं हो सकते । बल्कि अगर वे चित्र कला बोध कीदृष्टि से निम्न स्तर के हों, तो बच्चों को नुकसान ही होगा। ऐसी हालत में बच्चों को यह भान दे देना अच्छा होगा कि उनके अपने चित्रों का और पुस्तक के चित्रों का कोई संबंध नहीं है । अच्छा तो यह होगा कि चित्रित पुस्तक लिखने वाले बच्चों के लिए जो पुस्तक तैयार करें, उनमें बच्चों के ही अपने चित्र हों या फिर बच्चे खुद अपनी पुस्तकें तैयार करें ।

- *आप कभी बच्चों को सामने की किसी वस्तु का चित्र बनाने को नहीं कहते ?*

- बहुत कम । वह भी तब, जब बच्चे को कुछ सूझ नहीं रहा हो । हमारा आग्रह यह नहीं होता कि बच्चा उस वस्तु का चित्र बनाये, जो हमें दीखती है ।

- *कुछ बच्चे चित्रकला के साथ-साथ संगीत में भी रुचि रखते हैं। क्या उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिये ?*

- जरूर देना चाहिये ।

- *कोई-कोई बच्चे इधर-उधर रंग लगाते जाते हैं । कोई चित्र नहीं बनाते । ऐसे अवसर पर क्या आप उन्हें चित्र बनाने के लिए कहेंगे ?*

- इधर-उधर रंग लगाना अधिक दिनों तक नहीं चलना चाहिये। उसका यह मतलब होता है कि बच्चे को नये अनुभव नहीं मिल रहे हैं। इसलिये कुछ सुझाव के रूप में हो सके तो, प्रत्यक्ष अनुभव देना चाहिये ।

- *अच्छे-अच्छे चित्रों की नकल करने में क्या नुकसान है?*

- नकल करने में ही नुकसान है । खराब चित्रों की नकल करने में अधिक नुकसान है और अच्छे चित्रों की नकल करने में कम नुकसान है । आखिर तो वह नुकसान ही है और आमतौर पर साधारण शिक्षक को अच्छा चित्र किसे कहेंगे, इसका निर्णय लेना मुश्किल होगा।

- *महान कलाकारों की कृतियों से सीखने और उनके अनुभवों से लाभ उठाने का मौका आप बच्चों को नहीं देते हैं । क्यों? उससे फायदा नहीं है क्या ?*

- आमतौर पर सयानों का प्रभाव बच्चों की कला पर पड़े, तो उनकी स्वाभाविकता नष्ट हो जाती है । महान कलाकारों की कृतियों से सीखने के लिए और उनके अनुभव से लाभ उठाने के लिए बहुत कम समय है । चार-पांच साल परे जब सयानों के जगत में बच्चा प्रवेश करता है, तब अगर उसे यह अनुभव मिलें तभी वह स्वाभाविक माना जायेगा । हां, कला-बोध की दृष्टि से ये कृतियां देखने को मिलती रहें, तो कोई नुकसान नहीं ।

- *बच्चे चित्रों की समालोचना करते हैं क्या ?*

- हां, करते हैं । आपस में टोली के हिसाब से इस तरह की समालोचना करने से लाभ होता है ।

- *चित्रकला के साथ बच्चों को और क्या-क्या विषय सिखाना चाहिये ?*

- चित्रकला तो सिखानी ही चाहिये, किन्तु आपके प्रश्न के उत्तर में यह कहना अधिक उचित होगा कि सब विषयों के साथ भी चित्रकला का समावेश और समन्वय होना चाहिये ।

- *जब बच्चों के चित्र वास्तविक नहीं बनते हैं, तो भी क्या बच्चे उनसे संतुष्ट होते हैं ?*

- बच्चे के अपने चित्र कभी भी वास्तविक नहीं होते और वह हमेशा अपने उन अवास्तविक चित्रों से ही संतुष्ट होता है।

- *मेरा बच्चा वैसे तो काफी बुद्धिमान है । लेकिन उसके चित्र उतने अच्छे नहीं होते । क्या यह कहना गलत होगा कि ज्यादा बुद्धिमान बच्चे चित्र भी ज्यादा अच्छे बनायेंगे ?*

- नहीं । बुद्धिमता और कला-अनुभव, तार्किक शक्ति और सृजनात्मक वृत्ति दो अलग-अलग चीजें हैं । कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि बुद्धि में मंद बच्चे अधिक अच्छा चित्र बनाते हैं । असल बात यह है कि किसी का रास्ता कुछ है और किसी का कुछ।

- *बच्चों में जो प्राकृत वृत्तियां होती हैं, उन्हें क्या कला-प्रवृत्तियों के द्वारा समाधान मिलता है ?*

- कला उन वृत्तियों के निकास का जरिया है । और वह ऊंची श्रेणी का निकास है । उसी में समाधान भी आ जाता है।

- *गरीबों के बच्चे अक्सर अमीरों के बच्चों से अच्छा काम करते हैं। क्यों ?*

- गरीब अपनी गरीबी के कारण कुदरत से अधिक नजदीक रहता है । और इसलिये उसका आत्म-प्रकटन भी अधिक स्वाभाविक और प्रकृति के नजदीक होता है । अमीर बच्चों का वातावरण तुलनात्मक दृष्टि से कृत्रिम होता है। यह असर उनकी कला-प्रवृत्तियों पर भी पड़ता है ।

- *मैं सातवें वर्ग (चौदह वर्ष) का शिक्षक हूं और इस टोली को चौथे वर्ग से सातवें वर्ग तक लाया हूं । मेरा अनुभव यह रहा कि जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते गये, वैसे-वैसे उनके चित्रों में प्राण की कमी होती गयी । आपका क्या मंतव्य है इसके बारे में?*

- बच्चे किशोर-अवस्था में प्रवेश करने के समय सयानों की भांति देखना प्रारंभ करते हैं । यह उनके बदलने का काल होता है। आज समाज की धुंधली परिस्थिति में यह चीज बच्चों को कमजोर बना देती है । उसी का यह असर है । किन्तु स्वाभाविक वातावरण बनाने की अगर कोशिश की जाये, तो यह किशोर-अवस्था का संक्रमण काल बच्चों के लिए बड़ा सृजनात्मक सिद्ध हो जाता है ।

- *बच्चों के चित्रों में कोई-कोई अंग क्यों असलियत से ज्यादा बड़े होते हैं । जैसे, बच्चों के ज्यादातर चित्रों में सिर करीब-करीब शरीर जितना ही बड़ा रहता है, यह क्यों होता है ?*

- बच्चे बाह्य असलियत का चित्र नहीं बनाते । वे तो उनके मन के अंदर जो असलियत है, उसका चित्र बनाते हैं । बच्चे, जो दीखता है, उसका चित्र नहीं बनाते, बल्कि जो जानते हैं, उसका चित्र बनाते हैं । जिस वस्तु का या जिस अंग का महत्व उनके मन में अधिक होता है, उसका चित्र बनाते हैं । जिस अंग ने अधिक ध्यान खींचा हो, वह बड़ा बन जाता है । प्राचीन चित्रों में भी यह बात मिलती है । अजंता में देखिये । चित्र के जिस पात्र या अंग का अधिक महत्व है, उसे बड़ा बनाया गया है। कहीं-कहीं तो साधारण व्यक्तियों के चित्रों से बुद्ध भगवान के चित्र को दस गुना भी अधिक बड़ा बना दिया है । यह बाह्य असलियत नहीं, अंदरूनी असलियत है ।

- *क्या आप अपने वर्ग में एक ही समय बच्चों को अलग-अलग प्रवृत्तियां, जैसे , चित्र बनाना, मिट्टी की मूर्ति बनाना, कुम्हार-काम इत्यादि देते हैं ?*

- हां, अक्सर ऐसा ही करते हैं । यह बहुत कम पाया कि सब बच्चे एक ही काम करना पसंद करें । कोई चित्रकला करना चाहता है, तो कोई और कुछ । उन सबके लिए पूरी छूट और पूरा इंतजाम होना चाहिये ।

- *वस्तुओं का ठीक-ठाक चित्र बनाना, इसका अभ्यास कब शुरू करना चाहिये ?*

- करीब-करीब बारह साल के बच्चों को इसकी जरूरत पड़ने लगती है । किन्तु इसका नियम बनाना गलत है । कुछ बच्चे उससे कहीं पहले इसके बारे में सचेत हो जा सकते हैं ।

- *पर्सपेक्टिव ड्राइंग का अभ्यास कब शुरू कराना चाहिये?*

- काफी बाद में चलकर । ग्यारह-बारह साल की उम्र में अगर जरूरत पड़े, तो पर्सपेक्टिव के प्रारंभिक नियमों का ज्ञान दिया जा सकता है ।

- *जब आप दीवारों पर तस्वीरें लगाते हैं, तो बच्चे उनकी नकल नहीं करते क्या ?*

- अक्सर देखा गया है कि इस तरह की नकल कम होती है । वे ही बच्चे नकल करते हैं जिनकी कल्पना-शक्ति और सृजनात्मक प्रवृत्ति खूब पीछे पड़ी हो । जो बच्चे अक्सर अपने मन में चित्र बनाते हैं, जब वे ऐसे मौके पर नकल करते हैं, तो किसी विशेष प्रेरणा के कारण करते हैं । या तो चित्र ने या चित्र के विषय ने उन्हें खींचा होगा । कभी-कभी ऐसा हो, तो उस पर अधिक ध्यान देने की जरूरत नहीं ।

- *बच्चों को थोड़ा पर्सपेक्टिव ड्राइंग के तरीके बताना क्या अच्छा नहीं होगा ? उससे क्या वह ज्यादा अच्छे चित्र नहीं बना सकेंगे?*

- जिसे आप 'ज्यादा अच्छा' कहते हैं, वह आपका ज्यादा है, बच्चे का नहीं । बच्चे की दृष्टि से तो वही ज्यादा अच्छा है,जिसमें पर्सपेक्टिव ड्राइंग के तरीके का अभाव हो । वही बच्चों के चित्रों का चरित्र है।

- *वास्तविक चित्र बनाने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करने में क्या दोष है ?*

- जब बच्चे को अपने जगत में पूरा रहने का अधिकार नहीं होगा, तो आप ही समझिये कि उससे क्या नुकसान होगा । वास्तविक चित्र बनाने का मतलब यह हुआ कि बच्चे को उसके स्वभाव से पहले ही उसके स्वभाव के खिलाफ सयाने का स्वभाव देने का प्रयत्न किया जा रहा है । बच्चे को सयाना बनाने से जो नुकसान है, वही नुकसान बच्चों को सयानों जैसा चित्र बनाना सिखाने से है । वास्तविक चित्र बनाना सयानों का स्वभाव है, बच्चों का नहीं ।

- *बच्चों की सब प्रवृत्तियों में कला का स्थान होना चाहिये, इसका मतलब ?*

- इसका मतलब है, उनकी सब प्रवृत्तियां सृजनात्मक-कलात्मक होनी चाहिये । कला-बोध हर प्रवृत्ति का नतीजा होना चाहिये।

- *बच्चों को अगर पर्सपेक्टिव नहीं सिखाया जाता है, तो क्या वे उम्र बढ़ने के साथ-साथ वह अपने-आप सीख लेते हैं?*

- हां, उम्र होने पर उन्हें पर्सपेक्टिव की आवश्यकता महसूस होती है । और आवश्यकता के समय अगर कुछ मदद ठीक तरह से दी जाये, तो चीज आसानी से सीखी जाती है ।

- *क्या पर्सपेक्टिव की आवश्यकता हर एक बच्चे को महसूस होती है ?*

- नहीं, सच बात तो यह है कि अगर कला बोध का मापदंड ऊंचा होगा, तो बिना पर्सपेक्टिव के भी ऊंची रुचि के और ऊंचे स्तर के चित्र बनेंगे । संसार की अधिकतर प्राचीन कला-शैलियों में इस तरह के पर्सपेक्टिव का अक्सर अभाव देखा जाता है। अगर कला-शिक्षा का तरीका ठीक हुआ और सयानों के कला स्टैंडर्ड भी ऊंची कला की बुनियाद पर हुए, तो बच्चे भी यह जरूरी नहीं कि किशोर-अवस्था आने पर पर्सपेक्टिव या वास्तविकता की तरफ झुकें।

- *बच्चों को चित्रकला का अभ्यास कब शुरू करना चाहिये?*

- जितनी भी जल्दी हो सके ।

- *क्या आपके वर्ग में बच्चों को आनंद मिलता है ? उससे उसका मनोरंजन होता है क्या ?*

- अगर आनंद की संभावना न होती, वह अगर न मिलता, अगर बच्चों का मनोरंजन न होता, तो बच्चे वर्ग में आते ही क्यों ? आपने देखा है न कि बच्चे वर्ग में आते ही बड़े उत्साह के साथ काम में लग जाते हैं ।

- *क्या चित्रकला से बाकी विषयों को समझने में बच्चों को कुछ मदद मिलती है ?*

- चित्रकला का संबंध चाक्षुष अनुभवों से आता है और विषयों में भी मानसिक प्रतिबिंब की आवश्यकता चिंतन के लिए पड़ती है। मानसिक प्रतिबिंब चाक्षुष अनुभवों से संबंध रखते हैं । चित्रकला के द्वारा ये प्रतिबिंब स्पष्ट होते रहते हैं । इसलिये चित्रकला के अनुभव मदद ही करेंगे । चित्रकला की अनुभूति का जो पहलू है, वह भी जीवन के अन्य पहलुओं को गहराई तक ले जाने में मदद करता है।

- *वर्ग में बच्चों की आपस में स्पर्धा की भावना होती है क्या?*

- आज स्पर्धा मनुष्य के स्वभाव का एक अविच्छिन्न अंग-सा बन गयी है । इसका असर बच्चों पर भी पड़ता है । स्पर्धा बच्चों में प्रकृति की देन नहीं है, उससे बचना होगा ।

- *चित्रकला-वर्ग का एक नियमित समय रखना अच्छा है क्या ? या बच्चे अपनी इच्छा के अनुसार जाकर रंग, कूंची का उपयोग जब कभी करें, तो अच्छा होगा ?*

- सबसे अच्छा तो यह होगा कि बच्चों को पूरी-पूरी स्वतंत्रता हो। जब चाहें, जाकर चित्र आदि बनायें और अगर वातावरण में इस प्रवृत्ति की अहमियत का भान होगा, तो बच्चे ऐसा करेंगे ही । चित्रकला-वर्ग का नियमित समय रखना चित्रकला का कोई भी समय न रखने से तो अच्छा है ही ।

- *बच्चे बड़े-बड़े चित्र बनाना पसंद करते हैं या छोटे ?*

- यह कोई नियम नहीं बन सकता ।

- *रंगों के बारे में बच्चों को कितना बताना चाहिये ?*

- जब बच्चे कुछ पूछें, तो इस तरह बताना कि उनकी प्रयोग करने की वृत्ति बढ़े, अच्छा होगा ।

- *अगर मनुष्य में रंगों का बोध स्वाभाविक है, तो बड़ों के चित्रों में रंगों की डिसहार्मनी (बदमेल) क्यों पायी जाती है?*

- बड़ों के चित्रों में ही नहीं, आज तो बड़ों के सारे जीवन में ही डिसहार्मनी है।

- *अगर किसी बच्चे को चित्र बनाने का कोई विषय नहीं सूझता हो तो क्या करना चाहिये ?*

- उसे विषय सुझाकर, कहानी बताकर, कुछ प्रत्यक्ष अनुभव देकर प्रोत्साहन देना चाहिये ।

- *बच्चों को चित्रकला के साधन ब्रश इत्यादि क्या अच्छे-से-अच्छे श्रेणी के देने चाहिये ?*

- नहीं, कोई जरूरत नहीं । किन्तु बच्चों की आवश्यकता की दृष्टि से वे अच्छे-से-अच्छे होने चाहिये । अच्छे-से-अच्छे का अर्थ है, उनकी आवश्यकताओं की पूरी-पूरी पूर्ति करने वाला और उपलब्धि की दृष्टि से व्यावहारिक ।

- *बच्चों ने रंगों का गलत उपयोग किया, तो उन्हें सुधारना चाहिये?*

- गलत माने क्या ? क्या कपड़ों पर लगा दिया, जमीन में बिखेर दिया या एक-दूसरे के मुंह पर या कपड़ों पर लगा दिया? अगर ऐसा हो, तो जरूर बच्चों को इसके बारे में प्रोत्साहन नहीं देना चाहिये । किन्तु अगर चित्र के अंदर उसने अपने ढंग से रंगों का उपयोग किया, तो उसे आप गलत कैसे कह सकते हैं ?

- *बच्चे चित्र बनाने में क्या शिक्षक की मदद नहीं मांगते हैं?*

- जो बच्चे कुछ पिछड़े होते हैं, वे जरूर मांगते हैं । शिक्षक को उन्हें कुछ सहारे के तौर पर मदद देने की आवश्यकता होती है। किन्तु वह चित्र बनाकर दिखा देना या चित्र में मदद कर देना, इस तरह की नहीं होनी चाहिये ।

- *बच्चों के रहन-सहन के तरीके और वातावरण का उनकी कला-प्रवृत्तियों पर क्या असर पड़ता है ?*

- कला आत्म-प्रकटन का माध्यम है । जैसा रहन-सहन और वातावरण होगा, वैसा उसका आत्म-प्रकटन ।

- *लड़के और लड़कियों के चित्रों में क्या कुछ अंतर रहता है ?*

- हां, होता है । लड़कियां आलंकारिक चित्र कुछ अधिक बनाती है।

- *बुनियादी शालाओं में बच्चों को औद्योगिक प्रवृत्तियों-खेती, बागवानी, कताई आदि और कला-प्रवृत्तियों का मेल रहता है? क्या वे एक-दूसरे के पूरक या सहायक हो सकते हैं ?*

- सच्ची समवाय-पद्धति में हर विषय और हर प्रवृत्ति का आपस में मेल रहेगा । कला तो ऐसी प्रवृत्ति है, जो दूसरी हर प्रवृत्ति की प्राण बननी चाहिये ।

- *बच्चों की कल्पना-शक्ति चित्रकला के द्वारा प्रकाश पाती है । क्या कला-प्रवृत्तियों से उनकी कल्पना-शक्ति उत्तेजित और विकसित भी होती है ?*

- हां, होती है ।

- *क्या बच्चों को याद से चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये ? अगर करना चाहिये, तो किस उम्र से ?*

- बच्चे शुरू से ही याद से चित्र बनाते हैं ।

- *कोई बच्चा हमेशा एक ही वस्तु का चित्र बनाता रहता हो, तो क्या करना चाहिये ? मेरे वर्ग का एक बच्चा एक महीने से आते ही कागज के एक कोने से शुरू करके चिड़िया उड़ती हो, ऐसे चित्र से कागज का आधे से ज्यादा हिस्सा भर देता है और पन्द्रह मिनट में यह काम खतम करके दूसरे खेल में लग जाता है । ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिये?*

- अगर बच्चा हमेशा एक ही तरह का चित्र बना रहा है, तो समझना चाहिये कि उसे प्रत्यक्ष अनुभव कोई नया नहीं हो रहा है । इसलिये ऐसे मौके पर पहला काम यह होना चाहिये कि बच्चे को अनुभव दिये जायें । अंदर कुछ नया अनुभव आ जायेगा, तभी तो बाहर भी वह निकल सकेगा । इस तरह के अनुभव नहीं हो रहे हैं, यह स्पष्ट है । उसका इलाज कर लिया, तो काम हो जायेगा ।

- *क्या बच्चे की बौद्धिक शक्ति, योग्यता और कर्म-कुशलता का उनके चित्रों पर असर होता है ?*

- कोई जरूरी नहीं कि यह होता ही हो ।

- *यह मानी हुई बात है कि चौदह-पन्द्रह साल की उम्र में सृजन-शक्ति क्षीण होती है या बदल जाती है । इस अवस्था में और किस तरह की प्रवृत्तियां चित्रकला की जगह ले सकती है ?*

- तरह-तरह की कलात्मक दस्तकारियां और कला के दूसरे माध्यम ऐसे मौके पर उपलब्ध होने चाहिये ।

- *चित्रकला और मिट्टी के काम को आप समान श्रेणी में मानते हैं ? क्या मूर्तिकला में भी आत्म प्रकटन का माध्यम मिलता है?*

- हां ।

- *लकड़ी से और मिट्टी से चीजें बनाने में क्या अंतर है ? बढ़ईगिरी भी बच्चों के लिए आत्म-प्रकटन का माध्यम हो सकती है क्या?*

- हर वस्तु का अपना निराला चरित्र होता है। जो चीजें एक वस्तु से बनेंगी, वे भी अपने माध्यम का चरित्र रखेंगी । दोनों के औजार भी अलग-अलग हैं । इसलिये फर्क होगा ही । बढ़ई गिरी भी आत्म-प्रकटन का माध्यम हो सकती है, किन्तु छोटे बच्चे उसे इतना नहीं कर सकते ।

- *मैंने आपके वर्ग में बच्चों को अल्पना का अभ्यास करते हुए देखा है । वे कागज पर भी अल्पना का डिजाइन बनाते हैं क्या?*

- कागज पर भी बनाते हैं । किन्तु अल्पना का अभ्यास जमीन पर ही हो, इसका मुख्य महत्व है ।

- *आपके कला भवन में बड़े कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनियां होती हैं । बच्चों के चित्रों पर उनका कुछ असर नहीं होता है क्या? बच्चे कभी इन चित्रों को ध्यान से देखते हैं ?*

- बिल्कुल, छोटे बच्चे अक्सर इन चित्रों को चित्रों की दृष्टि से नहीं देखते । उनको उनमें कुछ मजेदार बात दिखी, तो कुछ ध्यान देते हैं, नहीं तो प्रदर्शनी का खयाल भी नहीं करते और अपने काम में लग जाते हैं । कुछ बड़े बच्चों पर उससे कुछ अधिक असर पड़ता है ।

- *आप मानते हैं कि बच्चे अपनी कल्पना-शक्ति और अनुभव से चित्र बनायें , तो ज्यादा अच्छा है । आप बड़ों के चित्रों के प्रभाव से उनको कैसे दूर रखेंगे ?*

- अपने ही अनुभव से चित्र बनायें तो ज्यादा अच्छा है, ऐसी बात नहीं । केवल अपने ही अनुभव से चित्र बनायें, ऐसाहोना

चाहिये। बड़ों के प्रभाव से दूर रखना आसान नहीं है । पहले तो बड़ों को यह समझना होगा कि बच्चे जो चित्र बनाते हैं, उनसे वैसे ही चित्र की अपेक्षा होनी चाहिये । अगर बड़ों ने बच्चों के चित्र समझने का प्रयत्न किया, तो आधा काम तो हो ही गया ।अपनी ही कल्पना-शक्ति के चित्र बनाने की पूरी छूट देनी चाहिये। बड़ों के मापदंड से उनके चित्रों को मापना नहीं चाहिये । इसके लिए प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम चलना चाहिये ।

- *स्टेनसिल, लीनोकट वगैरह किस उम्र में शुरू कर सकते हैं ?*

- ज्यों ही बच्चे इन माध्यमों के औजार इस्तेमाल करने लायक हो जायें, यह सब शुरू कर सकते हैं ।

- *बच्चों के लिए चित्रित पुस्तकों के बारे में आपका लेख हमारे स्कूल के सब शिक्षकों ने पढ़ा । क्या आप सोचते हैं कि इस तरह का चित्रित साहित्य बड़े पैमाने पर तैयार किया जा सकेगा ? तो यह किस उम्र के बच्चों के लिए होगा ?*

- आमतौर पर बच्चों के लिए साहित्य जितना भी स्थानिक हो, उतना ही अच्छा । शाला के बच्चे अपने छोटे बच्चों के लिए इस तरह का साहित्य तैयार करें। यह परंपरा अगर बन गयी, तो शाला में ही काफी साहित्य तैयार हो जायेगा। जो साहित्य बड़े पैमाने पर तैयार किया जाता है, उसमें यह नयी दृष्टि रखना कोई अव्यावहारिक चीज नहीं होगी, बल्कि उसमें पैसे की दृष्टि से भी बचत हो सकती है । चित्रों के चुनाव की भी खूब गुंजाइश होगी। इस तरह का साहित्य सब उम्र के बच्चों के लिए होना चाहिये ।

- *आप ऐसे जमाने की कल्पना करते हैं, जब बच्चों के द्वारा ही चित्रित साहित्य छोटी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों की जगह पूरा-पूरा लेगा । तो उससे क्या लाभ होगा ?*

- आज खासतौर पर नयी तालीम में पाठ्य पुस्तक कहकर कोई चीज नहीं है । हां, बच्चों के लिए अनेक पुस्तकें होनी चाहिये। उनमें जितनी भी हो सकें, चित्रित हों और उन्हें बनाने में जितना भी बच्चों के चित्रों का उपयोग किया जा सके, उतना ही अच्छा होगा। इसका मतलब यह नहीं कि सभी पुस्तकें इस तरह बनेंगी। हमने कहा है कि प्राकृतिक दृश्य अच्छे फोटो द्वारा दिये जा सकते हैं । ऊंची कला के नमूने इस्तेमाल किये जा सकते हैं । इन सबमें मैं बच्चों के द्वारा चित्रित पुस्तकों को अधिक महत्व देता हूं ।

- *मेरा आठ साल का लड़का सोचता है कि मेरा बनाया हुआ घर का चित्र उसके चित्र से अच्छा है, क्योंकि 'अम्मा की लाइनें साफ हैं, अच्छी हैं ।' इसके लिए क्या किया जाए ? आप कैसे कहते हैं कि बच्चे बच्चों के चित्र ज्यादा पसंद करते हैं ?*

- बच्चे को अम्मा जो कुछ भी करे, उसके लिए आमतौर पर 'हीरो-वरशिप' होता है । और यह भी हो सकता है कि बच्चे के मन में कुछ सयानों का असर हुआ हो । उतने असर को पूरा-पूरा दूर रखना आज की हालत में मुश्किल है, किन्तु अगर बच्चेके अपने काम के साथ बड़ों की समवेदना रहेगी और आदर होगा और बच्चे को विश्वास होगा कि अम्मा उसके चित्रों को सचमुच पसंद करती है, तो अम्मा की साफ लाइनों से कोई बुरा असर नहीं पड़ने वाला है ।

- *मेरे दोनों बच्चे जब कभी छुक-छुक गाड़ी देखने का मौका मिलता है, तो बड़े गौर से उसके इंजन के सब हिस्सों को देखते हैं और घर आकर चित्र बनाते हैं । एक-दूसरे के चित्रों में कमियां बताते हैं, उन्हें सुधारते हैं । लेकिन वे सब वस्तुओं को इतने ध्यान से देखते हों, ऐसी बात नहीं है । क्यों ? इसका क्या कारण है ?*

- उन्हें जो चीज आकर्षित करती है, उस चीज को वे देखते हैं और उसी को बनाते हैं । दोनों में जो देखने में फर्क होगा, उसी को लेकर एक-दूसरे की समालोचना करते हैं । जो चीज चित्र में बच्चे नहीं बनाते हैं और अगर उस पर आपका ध्यान गया हो, तो आप सोचते हैं कि वह बच्चों की गलती हुई । यह आपकी गलती है ।

- *एक बच्चे ने ऐसा चित्र बनाया कि एक आदमी को फांसी लटका रहे हैं । आप क्या समझते हैं , उसके पीछे क्या भावना काम कर रही है ?*

- उस विचार ने जरूर बच्चे के मन पर कुछ छाप डाली है। इसके पीछे करुणा भी हो सकती है और बदले की हिंसात्मक भावना भी।

- *बच्चों को इस तरह के अस्वस्थ ढंक के चित्र (फांसी इत्यादि के) बनाना ठीक है क्या ? उनको कैसे रोका जा सकता है ?*

- उनको अगर इस तरह के चिंतन से बचाना चाहते हैं, तो इस तरह के जितने भी चित्र बच्चे बनाना चाहें, बनाने दीजिये। इन भावनाओं का निकास अगर चित्रकला आदि विषयों के द्वारा नहीं हुआ, तो किसी ऐसे ढंग से होगा, जो समाज का और व्यक्ति का नुकसान करेगा । मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी यह प्रवृत्ति इस तरह अत्यंत उपयोगी होती है।

- *अगर किसी बच्चे की कल्पना-शक्ति कम है, तो उसको चित्र बनाने के लिए कोई विषय या वस्तु सुझाना ठीक होगा क्या?*

- हां, कभी-कभी सुझाना ही पड़ता है ।

- *वर्ग में बच्चों के चित्रों के बारे में चर्चा करना और एक-दूसरे के बारे में तुलना करना ठीक है क्या ? वह काम बच्चों को स्वयं ही करने का मौका मिलना चाहिये । आप मानते हैं कि आजकल स्कूलों में जो ड्राइंग क्लासेस होती हैं, वे नुकसानदेह हैं । क्यों ?*

- क्योंकि बच्चों को उनमें कोई रुचि नही होती और न वे उससे कला-बोध या कला-कौशल सीख पाते हैं ।

- *सभी शिक्षित स्त्री-पुरूषों को किसी वस्तु को देखकर ठीक-ठीक चित्र या स्केच बनने की कुशलता होनी चाहिये, यह शिक्षा कब शुरू करनी चाहिये ?*

- अगर बचपन से ही ठीक ढंग से कला-शिक्षा का कार्यक्रम बने, तो वह सबको स्वयं ही सध जायेगा । और सयाने अगर इस तरह चित्र या स्केच नहीं बना पाते हैं, तो उन्हें उस तरह की शिक्षा आज ही शुरू कर देनी चाहिये ।

- *सयानों की चित्रकला और बच्चों की चित्रकला का क्या संबंध है ?*

- कुछ नहीं ।

- *आमतौर पर लोगों की बच्चों के चित्रों के प्रति निरादर की भावना होती है । उसका क्या कारण है ?*

- हमारे देश में बच्चों के चित्रों की बात तो छोड़ ही दीजिये, बच्चों के प्रति कितनी आदर की भावना है, यह जरा बताइये।

- *आपका क्या अनुभव है, बच्चों ने कोई कहानी पसंद की, तो वे उसका चित्र बनाते हैं ?*

- कभी बनाते हैं, कभी नहीं ।

- *बच्चों के मां-बाप उनकी कला-प्रवृत्तियों में क्या मदद कर सकते हैं ?*

- उनका आदर करें और उस प्रवृत्ति के लिए उन्हें प्रोत्साहन दें ।

- *बड़े कागज पर चित्र बनाने के लिए बच्चे संकोच करते हैं । उस संकोच को कैसे दूर किया जाये ?*

- धीरे धीरे । सब्र के साथ ।

- *कुछ बच्चे ऐसे होते हैं, जो आलंकारिक भांत (पैटर्न) बनाना अधिक पसंद करते हैं । क्या उन्हें ऐसा करने के लिए पूरी छूट होनी चाहिये ?*

- पैटर्न ही केवल बनाते रहें, यह ठीक नहीं है । उन्हें चित्र बनाने के लिए हमेशा ही उत्साहित करना चाहिये । ऐसे कुछ अपवाद हो सकते हैं, जब कि बालक हमेशा नये-नये पैटर्न बनाने वाला हो । ऐसी हालत में उसी प्रवृत्ति का विकास करना अच्छा होगा ।

- *बच्चे आपसे कभी चित्र बनाने में मदद मांगते हैं ?*

- शुरू-शुरू में थोड़ी मदद मांगते हैं, किन्तु वे जब समझ लेते हैं कि मुझसे सीधी-सीधी मदद नहीं मिलती, तो वे नहीं मांगते।

- *अपने वर्ग में आप बच्चों का वर्गीकरण उम्र की दृष्टि से करते हैं या कुशलता की दृष्टि से ?*

- वर्गीकरण कुशलता और मानसिक विकास की दृष्टि से होना चाहिये, किन्तु उम्र का अधिक फर्क हो, तो ऐसे बच्चों का छोटी उम्र वालों के साथ रखना ठीक नही है ।

● *पत्रिकाओं में जो चित्र आते हैं, क्या उनकी नकल करने से बच्चे कुछ नहीं सीखेंगे ?*

- नहीं बल्कि उससे उन्हें नुकसान ही होगा ।

● *आजकल अंग्रेजी ढंग की कुछ ऐसी पुस्तकें आती हैं, जिनमें रेखा-चित्र बने हुए रहते हैं और बच्चों को उनमें रंग भरने का अभ्यास करने के लिए कहा जाता है । क्या यह ठीक है ?*

- ऐसा करना गलत है । हालांकि आज के वातावरण में काफी बच्चे ऐसा करना पसंद करते हैं । उन्हें अपने ही चित्र बनाने चाहिये।

● *आपका विचार है कि बच्चों को कला सिखानी नहीं चाहिये, बल्कि उन्हें अपनी इच्छा से चित्र बनाने देना चाहिये, तो इससे शिक्षक का काम क्या आसान हो जाता है ?*

- आसान नहीं, बल्कि और मुश्किल हो जाता है । जब 'सिखाने' की बात होती है, तो बनाकर दिखा दिया, हाथ पकड़कर बता दिया, उससे ही चल गया, ऐसा मान लेते हैं । किन्तु जिस तरह हम कहते हैं, वैसा करने से शिक्षक को बच्चे की हर अवस्था में बहुत ध्यान से अपना काम करना पड़ता है ।

● *मुझे तो इस पद्धति में बड़ी कठिनाई मालूम होती है । इस तरह के समझदार शिक्षक सब स्कूलों में कहां मिलेंगे ? शिक्षक को जितना समझदार होना चाहिये, उतने समझदार तो मिलेंगे नहीं।*

- अगर नहीं मिलते हैं, तो उनकी तैयारी करनी होगी । उन्हें बच्चों के बारे में जानकारी और अनुभव देना होगा । शिक्षक ही नहीं मिलेंगे, तो फिर शिक्षा के बारे में सोचते ही क्यों हैं ?

● *बच्चों के काम की परीक्षा आप कैसे करते हैं ?*

- हम परीक्षा लेने वाले कौन ? परचे लिखवाकर या ड्राइंग कराकर परीक्षा लेने में कोई सार नहीं होता । बच्चों को रोज का काम ही उनकी परीक्षा है । अगर वे खुश हैं और हमेशा नये-नये चित्र बनाने के लिए उत्सुक रहते हैं, तो वही उनकी परीक्षा में सफलता है ।

● *अनुकरण की वृत्ति तो बच्चों में होती ही है, उससे कैसे बचायेंगे?*

- बच्चे अनुकरण से भी सीखते हैं, किन्तु केवल अनुकरण से नहीं। उन्हें अपने प्रत्यक्ष अनुभव मिलते रहें, तो अनुकरण की वृत्ति कम-से-कम रहेगी ।

● *आपने कहा कि बच्चा जितना समय चाहता है, उतने समय उसे चित्र बनाने देना चाहिये । स्कूल के समय-पत्रक में यह संभव नहीं होगा, तो कैसे करें ?*

- स्कूल के समय-पत्रक को उतना कड़ा नहीं बनाना चाहिये। समय का थोड़ा-बहुत फेरबदल होता रहे, वही अच्छा है। समय-पत्रक 'मिकेनिकल' रहना बहुत गलत है ।

● *एक बच्चा चित्र बनाता है, उसका कोई अर्थ नहीं दीखता। तो क्या उससे पूछना नहीं चाहिये कि क्यों भाई, क्या सोचकर चित्र बनाया ?*

- पूछने में कोई हर्ज नहीं । अच्छा ही है । इससे उसका चिंतन विकसित हो सकता है । किन्तु जोर नहीं देना चाहिये।

● *अगर बच्चे गलत रंग का इस्तेमाल करते हैं, जैसे पेड़ को बैंगनी या लाल बनाया, तो उसे ठीक करने के लिए नहीं कहना चाहिये?*

- प्रकृति का पेड़ अलग होता है और कलाकार के मन का पेड़ अलग । और फिर बच्चों का तो बिल्कुल ही अलग है। इसमें आनंद की ही बात होनी चाहिये । यह उनकी कवि-कल्पना होती है । उसे कौन सुधार सकता है ?

● *संभव है कि बच्चा 'कलर ब्लाइंडनेस' के कारण गलत रंग दे रहा हो । आपका क्या अनुभव है ?*

- अभी तक मेरे सामने एक ऐसा अनुभव आया है । आमतौर पर ऐसा बहुत कम होता है । उसका इलाज शायद कला-शिक्षक के पास नहीं होगा ।

● *क्या आप बुद्धिपूर्वक बनाये चित्र को ज्यादा महत्व देते हैं ?*

- नहीं । कलाकार दो तरह के ही होते हैं । एक वे, जिनके चित्र बुद्धिप्रधान होते हैं और दूसरे वे, जिनके बोधप्रधान (इनट्यूटिव) होते हैं । एक कम महत्व का या दूसरा अधिक महत्व का नहीं होता । बच्चों के चित्र बुद्धिप्रधान नहीं होते।

● *अगर सब स्कूलों में इस तरह का कला-शिक्षा का तरीका प्रचलित हो गया, तो हमारे देश में आगे चलकर क्या ज्यादा कलाकार होंगे ?*

- कलाकार ज्यादा होंगे या नहीं, इस प्रश्न से अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि साधारण नागरिक का संपूर्ण विकास तभी होगा, जब स्कूलों में कला-शिक्षा का जैसा स्थान चाहिये, वैसा होगा और कलाकार तथा कला को समझने वाले लोग भी अधिक होंगे ।

● *सब कलाकार तो नहीं होंगे, फिर भी बचपन में जो मिट्टी-काम,बढ़ई-काम इत्यादि करने का मौका मिला, तो उससे क्या ज्यादा कुशल कारीगर बनने में मदद मिलेगी ? क्या हाथ से काम करने की अच्छी शिक्षा या अभ्यास सबको मिलेगा?*

- हां, आमतौर पर दस्तकारी की वृत्ति की जो कमी आज हमारे यहां है, वह नहीं रहेगी । साधारण व्यक्ति की कार्य-कुशलता अच्छी होगी । जिसे हम 'टेक्निकल' दृष्टि कहते हैं, उसका निर्माण करने के लिए हमारी यह कला-शिक्षा खूब मदद देगी ?

● *इस तरह की कला-शिक्षा क्या बच्चे को अपने प्राकृतिक वातावरण को समझने में मदद देगी ?*

- केवल मदद ही नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ एकरस होने में सहायक बनेगी । आज तो प्रोसेस उल्टा है । जैसे-जैसे व्यक्ति बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे वह प्रकृति से दूर हटता जाता है । कला-शिक्षा इस 'प्रोसेस' को ठीक दिशा देगी।

● *क्या आपका अनुभव है कि जिन बच्चों को आपके कला-वर्ग में काम करने का मौका मिला, वे फूल, पत्ते इत्यादि वस्तुओं के आकार को ज्यादा अच्छी तरह से समझते हैं ?*

- हां ।

● *आपने कल सचेतता का जिक्र किया था कि बहुत सयानों में भी आसपास की वस्तुओं का ज्ञान नहीं होता । क्या कला-शिक्षा के द्वारा बच्चों में यह सचेतता आ सकती है ?*

- कला-शिक्षा की यह सचेतता-अवेअरनेस-का पहलू बड़ा महत्वपूर्ण है। अपने वातावरण के साथ ऐक्य निर्माण के माने ही वही है।

● *क्या कसीदे का काम भी कला-शिक्षा में आ सकता है?*

- हां, आ सकता है ।

● *क्या संगीत में और चित्रों में छंद का ज्ञान बच्चों को स्वाभाविक रूप से होता है ?*

- काफी हद तक होता है ।

● *बच्चा कौनसी उम्र में सबसे स्वाभाविक और एकदम मुक्त रूप से कला का काम करता है ।*

- आठ-नौ साल की उम्र में ।

● *अगर कोई बच्चा नकल करना ही चाहता है और कुछ नहीं, तो आप क्या करते हैं ?*

- उस दिन उसे छोड़ देते हैं । उसके नकल के काम का कोई महत्व नहीं है, यह उसे भान हो जाना चाहिये । तब वह सोचना शुरू करेगा और कुछ मन से बनाने का प्रयत्न करेगा ।

● *इस तरह की कला-शिक्षा से क्या बच्चों में अच्छी रुचि पैदा होती है ।*

- हां, हम मान लेते हैं कि उसका जो वातावरण है, वह अच्छी रुचि का है । तभी तो वह कला-शिक्षा, जिसका हम बखान कर रहे हैं, वैसी होगी, जिसे हम उचित कहेंगे ।

● *अगर शुरू से ही ठीक मार्गदर्शन मिला, तो क्या बच्चे की सृजन-शक्ति ज्यादे समय तक टिकती है ?*

- हां, आशा तो यह है कि वह धीरे-धीरे विकसित ही हो, केवल टिके नहीं ।

● *अगर बच्चे ने शुरू से ही अपने मन से काम किया, उसको कुछ 'शिक्षा' नहीं दी गयी तो क्या उम्र पर उसको ठीक-ठीक परिमाण (प्रपोर्शन) का ज्ञान अपने-आप हो जाता है ?*

- बच्चे की स्वाभाविक कला-सीढ़ी के अनुसार अगर उसका विकास हुआ, तो परिमाण का ज्ञान अपने-आप होता जायेगा।

● *आप बच्चों के चित्रों की प्रदर्शनी करते हैं, तो क्या अच्छे और बुरे चित्रों को भी रखते हैं ?*

- प्रदर्शनी में अच्छे ही चित्र रहें, इसका प्रयत्न करता हूं । किन्तु किसी बच्चे का चित्र बिल्कुल छूट जाय, ऐसा नहीं होने देता हूं।

● *अगर किसी बच्चे ने अच्छा चित्र बनाया, तो वह क्या सारे वर्ग को दिखाना चाहिये ?*

- चित्र तो सभी सारे वर्ग को दिखाने चाहिये । किसी बच्चे को ऐसा भान नहीं कराना चाहिये कि वह वर्ग में विशेष स्थान रखता है ।

● *अगर किसी बच्चे की सृजन-शक्ति कमजोर है, तो आप किस प्रकार उसकी मदद करेंगे ?*

- कहानियों द्वारा । तरह-तरह के वर्णन कराकर, दस्तकारी और कला की तरह-तरह की कृतियां दिखाकर और उसके साथ समवेदना का भाव रखकर ।

● *बच्चों को घरों में और समाज में जो हलके स्तर के यानी बुरी रुचि के चित्र इत्यादि रहते हैं, इसे कैसे ठीक कर सकते हैं ?*

- चित्रों को फेंककर, जलाकर और उनके बदले अच्छे चित्र रखकर।

● *सयानों की रुचि ठीक करने का क्या उपाय है ?*

- इलाज बचपन से शुरू कीजिये और समाज के हर क्षेत्र में यह शिक्षा-पद्धति लागू कीजिये ।

● *बच्चे की जो सृजनात्मक वृत्ति है, वह बाद में क्या उसकी कारीगरी के काम में पाई जाती है ?*

- हां, उसका विकास ठीक होने पर ऐसा ही होना चाहिये।

● *बच्चों की कला-प्रवृत्तियों से सबसे बड़ा लाभ बच्चे का आनंद ही है न ?*

- केवल आनंद नहीं, उनसे उसका संपूर्ण विकास होता है।

● *अगर बच्चों को बहुत छोटी उम्र में ही लिखना-पढ़ना सिखाया जाता है, तो क्या वह इसकी कला-प्रवृत्तियों में बाधा पहुंचाता है ?*

- आमतौर पर तो आप जानते ही हैं कि नयी तालीम के सिद्धांत के अनुसार बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाने का मतलब बच्चे पर गैर जरूरी भार डालना होता है । यानी जितनी शक्ति उसकी सृजनात्मक प्रवृत्तियों में लगनी चाहिये, वह नहीं लग पायेगी । यानी उससे नुकसान ही होगा ।

● *बच्चा अपना चित्र दिखाता है और तारीफ ही सुनना चाहता है, तो क्या उसका चित्र तारीफ के योग्य न हो, तो भी तारीफ ही करनी चाहिये ?*

- बच्चों की कला के सिद्धांत की दृष्टि से देखने पर अगर चित्र में कमी हो, वह तारीफ के योग्य न हो, तो जरूर बताना चाहिये।

● *जो बच्चा बाएं हाथ का उपयोग करते हैं, उनको क्या करना चाहिये ?*

- बाएं हाथ का उपयोग ही करने देना चाहिये ।

● *आपका खुद भी अनुभव है कि सब बच्चे चित्रकला नहीं करना चाहते, वे कला-वर्ग के समय भागकर पेड़ पर चढ़ते हैं, तो आप क्या करते हैं ?*

- मेरा अनुभव ऐसा नहीं है । किन्तु जब कभी-कभी, जो कि बहुत कम होता है, बच्चे जाकर पेड़ पर चढ़ना पसंद करते हैं, तो मैं उन्हें जाने देता हूं और कभी-कभी तो मैं खुद भी जाकर पेड़ पर चढ़ जाता हूं ।

● *कला-वर्ग में ब्लैक बोर्ड रखना चाहिये ?*

- हां, कई ब्लैक बोर्ड रखने चाहिये और सफेद व रंगीन खड़िया भी, जिससे बच्चे खूब बड़ी-बड़ी ड्राइंग कर सकें ।

● *शिक्षक बच्चों को चित्र बनाने में प्रत्यक्ष 'मदद' भले ही न करे, लेकिन उसकी सहानुभूति और सहारा तो उनको मिलना ही चाहिये । व्यावहारिक तौर पर यह कैसे करें ?*

- साधन आदि का भरपूर इंतजाम करके और उनकी कृतियों की ओर आदर और सहानुभूति की दृष्टि रखकर ।

● *शिक्षा का काम ही बच्चों को ठीक रास्ते पर लाना है । आप उनकी गलतियों को सुधारेंगे ही नहीं, तो यह कैसे होगा?*

- शिक्षा का काम बच्चों को ठीक रास्ते पर लाना है, आप जब ऐसा कहते हैं, तो लगता है कि आपने मान लिया कि बच्चे गलत रास्ते पर हैं, जिसके बदले उन्हें ठीक रास्ते पर लाना है । गलती इस दृष्टि में ही है । आज तो शिक्षा का काम यह होना चाहिये कि उसका जो रास्ता है, वह ठीक है और हम ऐसा किस तरह करें कि बच्चा अपने रास्ते पर ही रहे। बच्चे का रास्ता अभय का, नि:संकोच का और सत्य का होता है । उसके चित्रों में ये तीनों चीजें रहती हैं। किन्तु हम उन्हें गलतियां कहते हैं, वे गलतियां नहीं, उसके अलंकार हैं ।

● *कला-वर्ग में शिक्षक इन सिद्धांतों के अनुसार काम करता है, ऐसा मान लीजिये । उसका कला-वर्ग आदर्श रूप से चलता है, फिर भी बच्चे की बाकी 23 घंटे की जिंदगी पर उसका क्या असर होगा ?*

- शिक्षा का काम तो है चौबीस घंटे का । किन्तु जहां वह नहीं होता और केवल एक ही घंटे उचित शिक्षा का मौका मिलता है, वहां उसी के परिमाण में उसका लाभ होगा । किन्तु कला-शिक्षा चूंकि बच्चे के आंतरिक जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध रखती है । इसलिये उसका वह असर भी हो सकता है, जो किसी दवाई का होता है, और जो बहुत कम मिकदार में दी जाती है ।

● *अगर बच्चे की सारी जिंदगी पर असर डालना है या कहिये, गलत असर से उसे बचाना है, तो क्या मां-बाप और शिक्षक की शिक्षा बच्चों को शिक्षा से भी ज्यादा जरूरी नहीं है ?*

- इसमें कोई शक नहीं। किन्तु ऐसा नहीं कर सकते कि योजना ऐसी बनायें कि पहले मां-बाप और शिक्षकों को पढ़ा लें और जब वे पूरे-पूरे तैयार हो जायें, तब बच्चों के प्रश्न को हाथ में लें। दोनों साथ-साथ चलने चाहिये । बड़ों की शिक्षा का माध्यम बच्चों की शिक्षा होना चाहिये । ◆